अक्स प्रभाव - तुम्हारा पल

अभय कांत श्री वास्तव

मेरे ठहराव में तुम ठहर सी जाओ
मेरे बहाव में तुम बह सी जाओ
मेरे हर रूख से तुम्हारा रूख हो
मेरे आँखों से तुम देखो
मेरे दिल को तुम देखो ,
क्या, यूं ही मैं फिरता रहूँगा
क्या तुम मुझे आवाज़ दोगी, नहीं?
मैं रुकूंगा, मुड़ूँगा और खो जाऊंगा फिर
वक़्त शायद बीत जाये , पर मैं-
क्या तुमको भूल पाउँगा !!
मेरे हर सवाल का जवाब हो तुम
या, बस एक ख्यालात हो तुम !
हर पल ये समझ रहा हूँ मैं , पर,
पल, यूं ही पल के साथ
पल भर में पल बन जाता है |
और, वो पल , बस मेरा, सिर्फ मेरा
सम्पूर्ण पल बन जाता है ||